M.A. Semester - II

III - Paper

Theoretical Perspectives on Development

By -: Ms. Bushra Fatima

Scanned with CamScanner

DATE: / /

(3) Ecological पारिस्थितिकीय

आर्थिक विकास में अनेक कारण अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं जिनमें प्राकृतिक संसाधनों की प्रमुख भूमिका है। यहां तक कि प्राकृतिक संसाधनों की कमी के बिना आर्थिक विकास की कल्पना करना भी बेमानी है। किन्तु यह भी माना जाने लगा कि तीव्र आर्थिक विकास की उत्कण्ठा में प्राकृतिक संसाधनों का अन्धाधुन्ध दोहन मानव समाज को प्रलय के कगार पर ले जा रहा है इसलिए कतिपय विद्वानों का मानना है कि आर्थिक विकास को पारिस्थितिकीय विकास के सन्दर्भ में ही समझा जाना चाहिए। उत्पादन कार्य के बिना प्राकृतिक संसाधन सम्भव नहीं है। यदि किसी देश में प्राकृतिक संसाधन नहीं है तो वहां उत्पादन प्रक्रिया भी कठिन होगी। प्राकृतिक संसाधनों के दोहन हेतु उन्नत तकनीक का होना भी आवश्यक है तथा उन्नत तकनीक देश के आर्थिक विकास को तथा आर्थिक विकास पारिस्थितिकीय विकास को लाभ पहुंचाते हैं। नवीन

Scanned with CamScanner

तकनीकों का उपयोग करके प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग सम्भव है, किन्तु प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इस प्रकार किया जाना आवश्यक है कि प्राकृतिक संसाधन समाज में निरन्तर बने रहें।

किसी भी देश के आर्थिक विकास में प्राकृतिक संसाधनों की विशेष भूमिका है। उपादन के अन्य साधन समान होने पर भी जिस देश के पास प्राकृतिक संसाधन अधिक होंगे वह देश अधिक तेजी से आर्थिक विकास कर सकेगा। विश्व के विकसित राष्ट्रों के विकास में वहाँ मौजूद प्राकृतिक संसाधनों का विशेष हाथ है। वास्तव में, प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता आर्थिक विकास के लिए आवश्यक कारण है तथा प्राकृतिक संसाधन विकास के निमित्त आवश्यक पृष्ठभूमि का निर्माण करते हैं। उदाहरणार्थ : जिन देशों के पास खनिज धातुओं, कोयला, खनिज तेल इत्यादि के समुचित भण्डार हैं, वे देश विश्व में द्रुत गति से विकास कर रहे हैं। इसी प्रकार कृषि विकास हेतु उपजाऊ भूमि एवं अनुकूल जलवायु का होना अत्यधिक आवश्यक है। किसी भी देश के सन्तुलित विकास के लिए उस देश के पास विभिन्न

Scanned with CamScanner

प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों का होना आवश्यक है। प्राकृतिक संसाधनों से पूर्ण लाभ उत्पत्ति के अन्य साधनों की उचित मूल्य पर पर्याप्तता तथा उत्पादित वस्तुओं की पर्याप्त माँग पर निर्भर है। किसी एक समय पर प्राकृतिक संसाधनों की सम्पूर्ण जानकारी सम्भव नहीं है। सर्वेक्षण अनुसंधान एवं निरन्तर जाँच से ही इन साधनों का पता लगाया जा सकता है। अतः किसी देश के सम्पूर्ण प्राकृतिक संसाधन उस समय ज्ञात व उपलब्ध संसाधन माने जाते हैं किन्तु विकास की दृष्टि से सम्भाव्य प्राकृतिक संसाधनों का भी महत्व है जैसा कि भविष्य में यह भी सम्भव हो सकता है कि किसी राष्ट्र में जो प्राकृतिक संसाधन आज अज्ञात है वे प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी में सुधार होने से कल ज्ञात किये जा सके एवं उनका उपयोग सम्भव बनाया जा सके। हालाँकि विश्व में कुछ उदाहरण ऐसे भी हैं कि कतिपय राष्ट्र ने बहुत कम प्राकृतिक संसाधन होते हुए भी पर्याप्त विकास किया है तथा कतिपय राष्ट्र ऐसे भी हैं जिनके पास प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता होने के बावजूद उन्होंने समुचित विकास नहीं किया है। इसका कारण है कि जो राष्ट्र

Rajdhani
PAGE
DATE / /

अपने अथवा दूसरों के प्राकृतिक संसाधनों से उत्पादकता में वृद्धि कर लेगा वही प्राकृतिक संसाधनों से वास्तविक लाभान्वित होगा।

प्राकृतिक संसाधनों के निरन्तर दोहन से इनकी समाप्ति का खतरा विश्व में मँडराने लगा है इसलिए प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा एवं इनके विकास की अत्यधिक आवश्यकता है जिसके लिए निम्नलिखित उद्देश्यों का पालन किया जाना आवश्यक समझा जाता है :

1- प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण तथा सावधानीपूर्वक सदुपयोग : प्राकृतिक संसाधनों का सावधानीपूर्वक एवं बुद्धिमत्तापूर्ण सदुपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि यदि समय रहते ऐसा न किया गया तो एक दिन सभी राष्ट्र व समस्त विश्व प्राकृतिक संसाधनों से वंचित हो जाएगा।

2- प्राकृतिक संसाधनों की मितव्ययितापूर्ण उपलब्धता : आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है कि प्राकृतिक संसाधनों की तत्परता व मितव्ययिता के साथ उपलब्धता हो तथा उनका उपभोग अधिकतम लाभ के हित में

Scanned with CamScanner

किया जाए। यदि प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग नहीं किया गया और अनावश्यक रूप से ये साधन नष्ट हुए तो हम हमारी भावी पीढ़ी कभी कुछ प्राप्त नहीं कर पाएगी।

3- न्यूनतम लागत: प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग इस प्रकार किया जाना चाहिए कि उससे न्यूनतम लागत पर उत्पादन सम्भव हो सके। प्राकृतिक संसाधनों का न्यूनतम लागत पर उपयोग होने से ही समुचित आर्थिक विकास सम्भव है।

प्राकृतिक संसाधनों के समुचित उपयोग हेतु निम्नलिखित विशेषताओं पर ध्यान रखा जाना आवश्यक है:

1- प्राकृतिक संसाधनों की परिवर्तनशीलता:

प्राकृतिक संसाधन उत्पादन के अन्य संसाधनों की भांति स्थिर नहीं होते जैसा कि उत्पादन के अन्य साधनों का उपयोग न करने पर भी उनमें कोई कमी नहीं आती। प्राकृतिक संसाधनों का मूल्य सांस्कृतिक व तकनीकी परिस्थितियों पर निर्भर करता है। इसलिए प्राकृतिक संसाधन ऐसे होने चाहिए कि उनमें परिवर्तनशीलता का गुण विद्यमान रहे।

Scanned with CamScanner

PAGE
DATE / /

2- आर्थिक विकास में अकार्यशील प्रभाव : प्राकृतिक संसाधन

आविष्कार, अनुसंधान अथवा नवीन तकनीकी के विकसित न होने पर कभी-कभी सुषुप्त पड़े रह सकते हैं अर्थात देश में तकनीकी विकास न होने पर प्राकृतिक संसाधन देश के आर्थिक विकास में अकार्यशील बने रहते हैं।

3- आविष्कारों व तकनीकी ज्ञान के निमित्त महत्व:

प्राकृतिक संसाधन का महत्व तकनीकी ज्ञान एवं आविष्कारों में वृद्धि होने से बढ़ जाता है। इसलिए प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग उसकी मौजूदा उत्पादन शक्ति पर निर्भर करता है।

4- प्राकृतिक संसाधनों का स्थानीकरण के कारण महत्व : प्राकृतिक संसाधनों का महत्व उनके पाए जाने के स्थान विशेष पर भी निर्भर करता है जो साधन अपने उपयोग के नजदीक मिलते हैं उन्हें अधिक मितव्ययिता से प्रयोग किया जा सकता है, किन्तु जो साधन दूरस्थ स्थानों पर मौजूद हैं उनका महत्व अधिक नहीं बढ़ पाता इसलिए प्राकृतिक संसाधनों का स्थान विशेष पर प्राप्त होना उसकी उपयोगिता

Scanned with CamScanner

में वृद्धि करता है।

5- उद्योगों की स्थापना में सहायक : प्राकृतिक संसाधन

उद्योगों की स्थापना में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यदि किसी स्थान पर किसी विशेष उद्योग हेतु कच्चा माल प्राप्त हो जाता है तो उस प्रकार के उद्योग उस स्थान पर आसानी से स्थापित हो जाते हैं। प्राकृतिक संसाधनों के निकट उद्योगों की स्थापना से उत्पादन की लागत में कमी आती है, परिवहन लागत में बचत होती है तथा कुल लागत कम हो जाती है।

6- समय का महत्व : प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग एक ही समय में नहीं किया जा सकता तथा समस्त संसाधनों का एक भाग प्रयोग कर शेष भाग भविष्य के लिए बचा कर रखा जाता है। किसी प्राकृतिक संसाधन का जितना भाग वर्तमान में उपयोग किया जाएगा यह उसकी माँग एवं मूल्य पर निर्धारित होता है। संपोषित विकास हेतु भी पारिस्थितिकीय परिवेक्ष्य महत्वपूर्ण माना जाता है। भारत में 3 दिसम्बर, 1984

को Bhopal गैस त्रासदी तथा 26 April, 1986 को चेरनोबिल नाभिकीय पावर स्टेशन पर हुई महाविपत्ति के बाद यह परिप्रेक्ष्य अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाने लगा है। गिडन्स जैसे विद्वानों का मत है कि पारिस्थितिकीय आन्दोलन आधुनिकता के ऐसे आयामों का मुकाबला करने के लिए विवश कर देते हैं जिन्हे अभी तक अनदेखा किया जाता रहा है। इसके अतिरिक्त इनसे प्रकृति और मनुष्यों के बीच के सूक्ष्म सम्बन्धों के प्रति व्यक्ति संवेदनशील भी बनते हैं इसलिए विकास के समय पारिस्थितिकीय दुष्प्रभावों के प्रति सचेत होना अत्यन्त आवश्यक है।

वस्तुत: पर्यावरणीय राजनीति और आन्दोलनों की वृद्धि ने समाजशास्त्रीय अन्वेषण के नवीन द्वार खोल दिये हैं जो राष्ट्रीय सीमाओं को नकारते हुए प्रकृति पर मानव कार्यवाही के प्रभावों पर पुन: विचार करने की मांग करते हैं।

पारिस्थितिकीय एवं संपोषित विकास पर अब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सहयोग में वृद्धि हुई है। अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य किसी भी देश को अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाए रखते हुए ऐसी बदलावकारी राजनीति

की बात करता है जो कि स्थानीय स्तरों से लेकर वैश्विक स्तरों तक संसाधनों का संग्रहण की मौजूदा प्रक्रियाओं और सत्ता के सोपानक्रम के लिए कड़ी चुनौती है। राजनीति का ऐसा बदलता मनुष्यों और प्रकृति का शोषण करने वाले ऐसे बलों को चुनौती देने में संघर्षों के विकास के माध्यम से प्रकृति एवं संसाधनों के चिरस्थायित्व को देखता है।